

चलीं आई चुनरिया द्रोड़, मात मेरी कालिका ॥१॥

जब-जब कष्ट पड़ो देवों पे, जब-जब कष्ट पड़ो भक्तों पे
मर्ल आई सिंगासन द्रोड़ मात मेरी कालिका

चलीं आई---

अहम करो जब रक्त बीज ने आई मात बन के शक्ति में
फिर ले लई हाथ तलवार मात मेरी कालिका

चलीं आई--

चाह चली रक्त बीज ने मैया, ज्योत जली खण्ड की मैया
सौ-सौ दानव भिराय मात कंकालिका

चलीं आई---

दुर्गा से काली भई जानी, देवों की भक्ति से न मानी
अरे शंकर भी घबराये मात कंकालिका

चलीं आई---

रूप सलीनो शंकर मांगे, भक्ति द्रोड़ वे रेंसे भागें
तुम्हें दास "श्री बाबा श्री" मनाय मात मेरी कालिका

चलीं आई---